7 सितम्बर 2000

साहित्य अकादेमी

इंडिया इंटरनेशनल सेंटर

लेखक से भेंट

कमलेश्वर

कमलेश्वर

माँ की गोद में शिशु कमलेश्वर, 1934

कमलेश्वर (पूरा नाम : कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना) का जन्म 6 जनवरी 1932 को हुआ लेकिन वे अपनी वर्तमान उम्र के साथ पिछले पाँच हज़ार वर्षों की सांस्कृतिक आयु को जोड़ना कभी नहीं भूलते, जो भारतीय महाद्वीप से जुड़ी सभ्यताओं, संततियों, कलाओं और भाषाओं में निरंतर प्रवहमान रही है। कमलेश्वर महाकाल की निर्बाध अजस्रता में भारतीय विरासत और पहचान को आज भी जीवंत संस्कृति की सबसे बड़ी पूँजी मानते हैं और इसलिए किसी भी कला-सर्जना या रचना को भारतीय प्रायद्वीप के निरंतर विकासमान सोच से जोड़े रखते हैं।

अपनी स्कूली पढ़ाई समाप्त कर कमलेश्वर ने इलाहाबाद से इंटर, बी.ए. और फिर हिन्दी में एम.ए. की पढ़ाई पूरी की। इस बीच उनकी कुछ रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी थीं और पहला उपन्यास *एक सड़क सत्तावन गलियाँ* पहले 'हंस' (इलाहाबाद) में और फिर *बदनाम गली* शीर्षक से भी छपा।

एक साधारण और मध्यवित्त परिवार में जन्मे कमलेश्वर को शिक्षा पूरी करने के बाद अपनी जीविका के लिए कुछ ऐसे कार्य भी करने पड़े जो बेहद अविश्वसनीय लग सकते हैं। इनमें किताबों एवं लघु पत्र-पत्रिकाओं के लिए प्रूफ़-रीडिंग, काग़ज़ के डिब्बों पर डिजाइन और ड्राइंग बनाने का काम, ट्यूशन पढ़ाना, पुस्तकों की सप्लाई से लेकर ब्रुक बॉण्ड चाय के गोदाम की रात की पाली में चौकीदारी तक शामिल है। ऐसी तमाम अनिच्छाओं, यातनाओं और ख़ौफ़ज़दा कल की आग और आँधी से गुज़रकर ही कमलेश्वर का लेखन कुन्दन और चन्दन बन सका और एक बार स्थायित्व मिल जाने के बाद कमलेश्वर ने इस मुहावरे कि 'कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा' को झुठलाते हुए वर्तमान के आईने में अपने विगत या अतीत के संघर्ष और संकल्प को आसन्न भविष्य और आगामी कृतियों के लिए भी जुगाये रखा।

सन् 1948 में प्रकाशित उनकी पहली कहानी 'कामरेड' से लेकर अब तक की उनकी साहित्यिक यात्रा एक प्रश्नाकुल रचनाशिल्पी की मानसिकता का पैमाना बन गयी है। कमलेश्वर ने अपनी कहानियों में सामान्य मनुष्य के दुख-दर्द को, उसकी आकांक्षा और वंचना को, उसके अभाव और संघर्ष को, उसकी विवशता के साथ उसकी अदम्य जिजीविषा को भी बड़ी सफलता से अंकित किया है।

यह उल्लेख्य है कि 'राजा निरबंसिया' (1957) जैसी महत्त्वपूर्ण कहानी से लेकर अब तक लिखी गई उनकी कोई तीन सौ कहानियों में कहीं कोई रचनात्मक दोहराव नज़र नहीं आता। सामाजिक एवं पारिवारिक संपृक्ति और नये सवालों और सरोकारों से जुड़ी कमलेश्वर की कहानियाँ उनके पाठकों से नज़दीकी रिश्ता इसलिए बना लेती हैं कि वे इनमें अपनी यातना, लड़ाई, कुण्ठा और सपनों की मिसमार होती तस्वीरें देखते हैं। अपनी त्रासदी, पराजय और राख होती आग से पुती उनकी आकांक्षाओं की उँगलियाँ फिर किसी आँच को टोहने-टटोलने लगती हैं। 'राजा निरबंसिया' जैसी आरम्भिक कहानी में दाम्पत्य जीवन के बेहद कोमल और मधुर क्षणों को आर्थिक विपन्नता किस तरह लील जाती है—इसे देखा जा सकता है। ऊपर से बेहद सुन्दर और स्वाभाविक लगनेवाली यह दुनिया अन्दर से कितनी खोखली है—इसे रूपक के तौर पर प्रस्तुत कर, कहानी और आख्यान तत्त्व के सम्मिश्रण से, कमलेश्वर ने एक नई ज़मीन तैयार की थी।

'मांस का दरिया' में जहाँ सम्बन्धों की टकराहट है, वहाँ संवेदना की सुगबुगाहट भी; 'तलाश' में यौनबुभुक्षाग्रस्त जवान विधवा माँ और युवा बेटी की संवेदनाओं की ऐन्द्रिक आँच देखी जा सकती हैं। 'नीली झील' प्रौढ़ा महिला और युवा पुरुष के निषिद्ध प्रेम सम्बन्ध को मानवीय जामा पहनाती है तो 'बदनाम बस्ती' भारत के उन असंख्य गाँवों की त्रासदी को रूपायित करती है, जो आत्मीय, अन्तरंग और सहज सम्बन्धों को तबाह कर देनेवाली ताक़तों के शिकार हो चुके हैं। समकालीन सामाजिक विसंगतियाँ और परिवेश से सम्बद्ध ऐसी विशिष्ट कहानियों में 'बयान' कहानी स्वतन्त्र भारत में न्याय तन्त्र के खोखलेपन को उजागर

इलाहाबाद वि.वि. से एम.ए. की उपाधि 1954

धर्मपत्नी गायत्रीदेवी और कमलेश्वर

करनेवाली एक हिन्दी सेवक की दुखांत परिणति को रेखांकित करती है तो 'नागमणि' महानगरों में बेहद एकान्त और आत्मघाती ज़िन्दगी से उपजी है; 'अपना एकान्त' बेकार जवान भाई और नौकरीशुदा बहनवाले घर-संसार में अकारण और अस्वाभाविक तनाव से भरी कहानी है। 'आसक्ति', 'ज़िन्दा मुर्दे', 'ज़ोख़िम', 'क़स्बे का आदमी', 'मुर्दों की दुनिया, 'एक थी विमला', 'दिल्ली में एक मौत', 'किसके लिए', 'मानसरोवर के हंस', 'स्मारक', 'अपने देश के लोग', 'भरे पूरे अधूरे' और 'जार्ज पंचम की नाक' जैसी कई कहानियाँ अपने देश-काल-पात्र से जुड़ी—आर्थिक विषमता, आज़ाद भारत में सत्ता, संस्था, साधनों और संसाधनों की लूट-खसोट, प्रतिष्ठान या व्यवस्था की दखलंदाज़ी, तन्त्र के आतंक और न्यायहीन समाज में बदतर और कमतर ज़िन्दगी जी रहे आम आदमी से जुड़े बेहद संवेदनशील और प्रतिश्रुत लेखक के सोच, सरोकार और यथार्थबोध की साक्षी, अविस्मरणीय कहानियाँ हैं।

अपनी कहानियों की विषय-वस्तु और उनके शिल्प, न्यास, संवाद एवं संरचना तथा निहित संकेत के लिए कमलेश्वर अपने पाठकों में लगातार लोकप्रिय होते चले गए। उनकी कहानियाँ 'हंस' और 'साप्ताहिक जयभारत' सहित जिन पत्र-पत्रिकाओं में लगातार

रेडियो पर आलेख प्रस्तुति

प्रकाशित होती रहीं उनमें 'कल्पना' (हैदराबाद), 'संगम' (इलाहाबाद), 'ज्ञानोदय' (कलकत्ता), 'वसुधा' (जबलपुर), 'सुप्रभात' (कलकत्ता), 'समाज कल्याण' (दिल्ली), 'आजकल' (दिल्ली), 'लहर' (अजमेर), 'नई कहानियाँ' (इलाहाबाद-दिल्ली) आदि विशेष उल्लेख्य हैं।

सामाजिक वैषम्य, शोषण और वर्गीय असमानता का रचनात्मक विरोध करनेवाले कमलेश्वर की विचारधारा दलीय या संकीर्ण राजनीति से प्रेरित नहीं है—वह मध्यवर्गीय और बुद्धिजीवी वर्ग की मानसिकता से उपजी प्रगतिशील चेतना से अनुप्राणित रही है। वे सतत रचनाशील लेखक, मुखर पत्रकार और आम आदमी के संघर्ष में सम्मिलित जुझारू प्रवक्ता हैं। उनका लेखन ही नहीं, विविध रचना-कर्म इस बात के साक्षी हैं और गारंटी देते हैं कि एक प्रतिबद्ध वामपंथी के नाते, वे प्रगतिशील आन्दोलन के प्रथम दौर से ही उसके साथ जुड़े रहे हैं—लेखन, चिन्तन एवं संगठन—तीनों स्तरों पर। वे यह मानते हैं कि कोई कला या साहित्य का कोई भी रूप मनुष्य से बड़ा या उससे ज़्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं हो सकता। सारिका के सम्पादक (1967-78) के रूप में हिन्दी कहानी के जिस समान्तर आन्दोलन का उन्होंने नेतृत्व किया, वह प्रगतिशील आन्दोलन और लेखन को दोबारा जीवित और रूपायित करने की उत्कट लालसा से ही सम्भव हुआ।

कमलेश्वर के कुछ उपन्यास पुस्तकाकार छपने के पहले पत्रिकाओं में छपकर चर्चित हो चुके थे। *एक सड़क सत्तावन गलियाँ* 'हंस' में, *काली आँधी* और *समुद्र में खोया आदमी* 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में और *आगामी अतीत* 'धर्मयुग' में। *एक सड़क सत्तावन गलियाँ* (1953) अपनी सशक्त कथावस्तु, प्रभावी भाषा सामर्थ्य, *डाक बँगला* (1963) नारी जीवन की मर्मान्तक और अनकही त्रासदी, *तीसरा आदमी* (1962) पति-पत्नी के बीच किसी तीसरे की अवांछित और अमर्यादित

उपस्थिति से उत्पन्न मनोग्रंथि और *समुद्र में खोया आदमी* (1963) मध्यवर्गीय जड़ता, अंधसंस्कार और कुंठाओं पर प्रहार के कारण पाठकों का विश्वास अर्जित करनेवाली औपन्यासिक कृतियाँ थीं। *तीसरा आदमी* में आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के बेबाक चित्रण के साथ आधुनिक मन की गहन पड़ताल भी थी, जिसे ज़मीनी सच्चाई से जोड़ा गया था। *लौटे हुए मुसाफ़िर* (1957) हिन्दुस्तान को तीन टुकड़ों में बाँटकर अलग बनाये गये दो-दो पाकिस्तान और लाखों शरणार्थी बने हिन्दू-मुसलमानों और असंख्य घर-परिवारों की यातना और संत्रास की व्यथा-गाथा थी। वर्षों के अन्तराल बाद जब बच्चे जवान होकर अपने पुश्तैनी क़स्बे पहुँचते हैं तब खण्डहर हुए घर का हाहाकार ही नहीं, इतिहास का अट्टहास भी सुनते हैं।

काली आँधी (1970, जिस पर गुलज़ार ने बहुत सशक्त फ़िल्म बनाई) में उन्होंने पति-पत्नी के दो टूटे व्यक्तित्व को पहले समय के हाथों बिखरने दिया और फिर उन्हें समेटते हुए—देश काल में व्याप्त राजनीतिक भ्रष्टाचारों और सामाजिक सदाचारों की अन्दरूनी कहानियों को उधेड़ा। तब बहुतों को उनका यह कार्य बहुत दुस्साहसपूर्ण लगा था—विशेषकर उनको जो मख़मली दस्ताने पहनकर हाथ मिलाने के आदी रहे हैं। कमलेश्वर ने इन विषयों को चुनते हुए भी कहीं भी अतिरंजना से नहीं बल्कि संयम और मानवीय अनुरोध से काम लिया।

कमलेश्वर के परवर्ती सभी उपन्यासों की विषयवस्तु भी निम्नमध्यवर्गीय समाज के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और वैयक्तिक सवालों से टकराती रही है। *एक सड़क सत्तावन गलियाँ (बदनाम गली), डाक बँगला, लौटे हुए मुसाफ़िर, तीसरा आदमी, समुद्र में खोया हुआ आदमी, काली आँधी* और *आगामी अतीत* उपन्यासों में क़स्बों और महानगरों की ज़िन्दगी के यथार्थ चित्र एवं सम्बन्धों के अन्तहीन टकराव—व्यक्ति, समाज, समय एवं मूल्यों के बिखराव के साथ अंकित हैं। हमारी सामाजिक संस्थाएँ एक-एक कर जिस तरह टूट-बिखर रही हैं, मानवीय अनुरोध और अनुबन्ध जिस क़दर अविश्वसनीय होते जा रहे हैं—वे यहाँ पूरी शिद्दत के साथ उपस्थित हैं। उनकी रचनाएँ, यहाँ तक कि लघुकथाएँ भी, आम आदमी की हताशा, हैरानी और बदहवासी की गवाही देती हैं।

थियानमान स्क्वायर : चीन में दुभाषिये के साथ

बीसवीं सदी की अवसान वेला में प्रकाशित कमलेश्वर की अद्यतन औपन्यासिक कृति *कितने पाकिस्तान* एक सर्वथा उल्लेख्य, रोचक और पठनीय ही नहीं, वक्त की ज़ुबानी बाँची गई एक लोमहर्षक और विचारोत्तेजक महागाथा है। यह कृति तमाम ऐतिहासिक उथल-पुथल, साहित्यिक आन्दोलनों, सांस्कृतिक टकरावों और धार्मिक उन्माद से उत्पन्न युद्धों के साथ मनुष्य के उत्कर्ष एवं अपकर्ष, हर्ष और विषाद, दंश एवं द्वन्द्व, उत्थान एवं पतन का ऐतिहासिक और निर्णायक दस्तावेज़ बन गई है। संक्रमणशील और विकृत सामाजिक स्थितियाँ और दुरभि-सन्धियाँ—हमें इस बात के लिए बार-बार आगाह करती हैं कि अगर हम अपनी ऐतिहासिक विफलताओं से अब भी कोई सीख नहीं लेंगे तो कब लेंगे।

जश्ने कृश्नचन्दर : लेखकों के साथ कमलेश्वर 1968

हिन्दी फ़िल्मों और टेलीविज़न माध्यम से सम्बद्ध रहे साहित्यकारों में भी कमलेश्वर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नाम है। उनकी कई कहानियों ने फ़िल्म और टेलीविज़न माध्यम और फ़िल्म व्यवसाय को सामाजिक संवेदना एवं कलात्मक ऐन्द्रिकता प्रदान की है। हिन्दी फ़िल्मों में मुंशी का पर्याय रहे लेखक क्री, कमलेश्वर ने एक नई पहचान और नई प्रतिष्ठा दी। फिर भी, सारा आकाश, आँधी, अमानुष और मौसम जैसी कलात्मक फ़िल्मों से लेकर व्यावसायिक फ़िल्मों तक कमलेश्वर ने कुल 99 फ़िल्मों का लेखन क्रिया। वे एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक दायित्व के रूप में इस व्यावसायिक कला माध्यम से भी गहरे जुड़े रहे और इसे एक नया वैचारिक धरातल देने की सफल और सार्थक पहल की। 'बदनाम बस्ती' हो या 'डाक बँगला'—इन सबमें दर्शकों ने जीवन के उन अछूते और अनकहे क्षणों का साक्षात्कार किया, जिन्हें सिनेमा के परम्परावादी दृश्यों या कथानकों से अलग माना गया। न्यूवेव या समान्तर सिनेमा की संज्ञा के साथ इसे एक नए और सार्थक आन्दोलन के रूप में भी देखा गया।

आकाशवाणी और बाद में टेलीविज़न के लिए आलेखक पद पर रहकर कमलेश्वर ने समसामयिक और प्रासंगिक विषयों पर लेखन तथा उनकी रचनात्मक प्रस्तुति, साहित्यिक कार्यक्रम 'पत्रिका' की शुरूआत, धाराविवरणी (रनिंग कमेंट्री) तथा पहली टेलीफ़िल्म 'पन्द्रह अगस्त' का निर्माण किया। अछूते विषयों और सवालों से पूरे देश को झकझोर देनेवाले 'परिक्रमा' कार्यक्रम (जिसे यूनेस्को ने दुनिया के दस सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रमों में से एक माना) में कमलेश्वर ने साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक समस्याओं पर खुली और गम्भीर बहस करने की दिशा में साहसिक पहल की थी।

1954 में 'विहान' जैसी पत्रिका का संपादन आरम्भ कर कमलेश्वर ने दर्ज़नों पत्रिकाओं का सफल सम्पादन किया, जिनमें 'नई कहानियाँ', 'सारिका', 'कथा यात्रा',

तक्षशिला संग्रहालय, इस्लामाबाद,
पाकिस्तान से सीधा प्रसारण, 1981

'गंगा' आदि प्रमुख हैं। इन सबमें उनकी सम्पादकीय प्राथमिकताएँ थीं—नई प्रतिभाओं को नये विषयों पर लिखने के लिए प्रेरित करना और सशक्त हस्ताक्षरों से उनका सर्वश्रेष्ठ प्राप्त कर प्रकाशित करना। कमलेश्वर दूरदर्शन के अतिरिक्त महानिदेशक (1980-82) रहे। 'दैनिक जागरण' तथा 'दैनिक भास्कर' जैसे महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय दैनिकों के सम्पादन के बाद इन दिनों दिल्ली में स्वतंत्र लेखन के साथ जैन टी.वी. को अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

जागरूक सम्पादक दैनिक जागरण कार्यालय नोएडा, दिल्ली में 1990

प्रकाशित कृतियाँ

कहानी-संग्रह

राजा निरबंसिया	1955
क़स्बे का आदमी	1957
खोई हुई दिशाएँ	1963
मांस का दरिया	1963
बयान	1963
जाज पंचम की नाक	1964
मेरी प्रिय कहानियाँ	1965
कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ	1969
ज़िन्दा मुर्दे	1969
इतने अच्छे दिन	1970
कथा प्रस्थान	1990
कमलेश्वर की प्रेम कहानियाँ	1995
कोहरा	1996
श्रेष्ठ आंचलिक कहानियाँ	1997
चर्चित कहानियाँ	1997
दस प्रतिनिधि कहानियाँ	1998
कमलेश्वर की समग्र कहानियाँ (दो खण्डों में)	2000

उपन्यास

एक सड़क सत्तावन गलियाँ	1953
लौटे हुए मुसाफ़िर	1957
डाक बँगला	1961
तीसरा आदमी	1962
समुद्र में खोया हुआ आदमी	1963
काली आँधी	1970
वही बात	1971
आगामी अतीत	1972
सुबह....दोपहर...शाम	1973
रेगिस्तान	1980
एक और चन्द्रकान्ता (दो खण्ड)	1997-1998
कितने पाकिस्तान	2000

नाटक

अधूरी आवाज़	1962
बाल नाटकों के चार संग्रह	1962
रेत पर लिखे नाम	1997
हिन्दोस्तां हमारा	1998

नाट्य रूपान्तर

चारुलता (रवीन्द्रनाथ कृत नष्टनीड़)	1960
खड़िया का घेरा (ब्रेष्ट लिखित)	1966

आलोचना

नई कहानी की भूमिका	1956
मेरा पन्ना : समान्तर सोच (दो खण्ड)	1978

यात्रा-विवरण

खण्डित यात्राएँ	1956
कश्मीर : रात के बाद	1996

आत्मपरक संस्मरण

जो मैंने जिया	1995
यादों के चिराग़	1996
जलती हुई नदी	1997

विविध

देश-देशान्तर (डायरी)	1972-73
घटनाचक्र	1996
सिलसिला थमता नहीं	1998

सम्पादित

संकेत (बृहद साहित्यिक संकलन)	1955
नई धारा (समकालीन कहानी विशेषांक)	1965
समान्तर–1	1970
मेरा हमदम : मेरा दोस्त	1980
गर्दिश के दिन	1980
आद्य कथाकार	1981
मराठी कहानियाँ (दो खण्ड)	1986
तेलुगु कहानियाँ	1987
पंजाबी कहानियाँ	1988
उर्दू कहानियाँ (दो खण्ड)	1989

पत्र-पत्रिका सम्पादन

विहान	1954
इंगित (सा.)	1961-1963
नई कहानियाँ (मा.)	1963-1966
सारिका (मा./पा.)	1967-1978
कथायात्रा (मा.)	1978-1979
श्रीवर्षा (सा.)	1979-1980
गंगा (मा.)	1984-1988
दैनिक जागरण	1990-92
दैनिक भास्कर	1997- अब तक

सम्प्रति

दिल्ली में रहकर स्वतंत्र लेखन